Volume: 1 Issue: 2 Pages: 55-57
International Journal of Research in Academic World
E-ISSN: 2583-1615
Impact Factor: 3.133
Received: 16/September/2021 Int. J Res. Acad. World. 2021; 1(2):55-57 Accepted: 21/October/2021

# कथक नृत्य शैली का छन्द

*[1]डॉ. जितेश गड़पायले

*[1]सहायक प्राध्यापक, कथक नृत्य विभाग, नृत्य संकाय, इं.क.सं.वि.वि. खैरागढ, छत्तीसगढ़, भारत।

**सारांश**

यह लेख कथक नृत्य शैली में लय और ताल की अवधारणा और महत्व पर केंद्रित है, लेख में, ताल को भरतमुनि के अनुसार संगीत में आवृत्ति की निश्चित सीमा बद्धता कहा गया है, जबकि लय को दो क्रियाओं के बीच के समय या दूरी के रूप में परिभाषित किया गया है। लहरों के टकराने को सशब्द क्रिया और लौटकर जाने को निःशब्द क्रिया का उदाहरण देकर लय और ताल के प्राकृतिक संबंध को समझाया गया है। ये दोनों एक–दूसरे में गुंथे हुए हैं।

लेख में विलम्बित, मध्य, और द्रुत तीन प्रकार की लय का उल्लेख है, जिसमें अतिविलम्बित लय को संभालना चुनौतीपूर्ण बताया गया है, जिसका चलन रायगढ़ घराने में होता आया है।

छन्द को एक पवित्र शक्ति माना गया है, और इसे लय के स्वरूप या भावों की विशिष्ट धारणा कहा गया है। राजा चक्रधर सिंह ने इसी व्याकरण को ध्यान में रखते हुए, अनेक अनोखे बोल बन्दिशों जैसे श्दल बादलश, श्चमक बिजलीश, और श्मेघावलीश की रचना की। इन तालों के माध्यम से वे दर्शकध्सहृदय में भावों को जाग्रत करते थे।

**मुख्य शब्दः** समुद्र की लहरों में ठहराव होता और हर लहरों के आने–जाने में आकृति का उत्पन्न होना नाद को सूचित करता है। भरतमुनि के अनुसार संगीत में आकृति की निश्चित सीमा बद्धता को ताल कहते है। लहरों का टकराना सशब्द क्रिया और लौटकर जाना ही निशब्द क्रिया का प्रमाण है।

## प्रस्तावना

समुद्र की लहरों का उन्माद जब किनारे आकर ठहरता है, तब एक आवाज़ के साथ खत्म हो जाता है। यह ख़त्म होना ठहराव है। हर बार लहरों का आना और ठहर कर वापस जाना आवृत्ति उत्पन्न करता है। (भरत के अनुसार संगीत में आवृत्ति की निश्चित सीमा बद्धता को ताल कहते हैं)। लगातार लहरों का आना–जाना निश्चित अवधि में होता है, और निश्चित परिमाण में जो अवधि या समय व्यतीत होता है उसे काल कहते हैं।

### 1. आचार्य वृहस्पति के अनुसार पौराणिक कथाओं का गायन तथा हाव–भाव द्वारा नृत्य के माध्यम से प्रयुक्त करने वाले कथा–वाचकों का एक वर्ग बन गया है।

संगीत में ताल से ही काल की सीमा निर्धारित होती है। एक–दूसरे पर अवलम्बित होते हुए हैं काल व ताल। लहरों का टकराना सशब्द क्रिया और लौटकर जाना निःशब्द क्रिया है। लय और ताल प्रकृति में समायी है। इन्हें अलग–अलग समय के चक्रों में बाँधकर अनेक तालों की कल्पना की गयी और उन अनेक तालों के अनेक नाम बनें। लय के समय को काटकर उसकी एक आवृत्ति ही काल का रूप धारण करती है। जितनी सरलता सहजता से लय चलेगी, उतना ही सौन्दर्य ताल का होगा। नर्तक या नर्तकी अपनी मनःस्थिति के अनुसार अपने नृत्य में ताल को तरह–तरह से विभाजित कर सकती है। उनका ताल को विशेष तरह से बरतना ही ताल को विशेष तरह से अनुभव के घेरे में ले आएगा और सहृद्य अलग–अलग मार्गों से ताल की विशालता का अनुभव करने की स्थिति में आ सकेगा।

### 2. संवेग की स्थिति में शरीर में आंतरिक व बाह्य परिवर्तन होते है संवेगी का नियंत्रण भी आवश्यक है उत्तम स्थिति वह है जब उनका रूपांतरण करके उनकी सौन्दर्यात्मक अनुभूति की दिशा में धुमा दिया जाये।

इस जगह आकर हमें थोड़ा ठहरकर एक बार फिर पूछ लेना चाहिए कि लय क्या है? इस जगत में जितनी भी क्रियायें होती है उन सभी में लय होती है। चाहे वो प्राकृतिक क्रियायें हो या मानवीय। ऐसी कोई क्रिया को उपलब्ध नहीं हैं जो सिरे से लयहीन हों। लय मापने के लिये क्रिया ज़रूरी है। इसके लिए दो क्रियायों के बीच के

*Corresponding Author: डॉ. जितेश गड़पायले

समय को नापना होता है और इन क्रियाओं की बीच की दूरी को ही कहा जा सकता है लय। इसी तरह ताल को क्रिया मानें तो उसके बीच की दूरी को लय मानना होगा, इसलिए ताल और लय एक दूसरे में गुंथे हुए है। प्रसिद्ध शास्त्रकार शाङ्गदेव क्रिया के बिल्कुल साथ जुड़ी दूरी या विश्रान्ति को लय कहते है। एक क्रिया और दूसरी क्रिया के बीच का काल जो पहली क्रिया का विस्तार होता है, वही लय है। उनका कथन है –

विश्रान्तियुक्तया काले क्रियया मानमिष्यते।
क्रियानन्तर विश्रान्तिर्लयः,

**3. (संगीतरत्नाकर/मार्गतालतत्वलक्षण–प्रकरण–43)**

लय के तीन प्रकार हैं, विलम्बित, मध्य, द्रुत। द्रुतलय में मात्राओं के बीच की दूरी कम होती है। मध्य लय में थोड़ी ज़्यादा और विलम्बित लय में इन दोनों लयों से ज़्यादा रूकना होता है। अतिविलम्बित लय में दो मात्राओं के बीच ठहराव और अधिक बढ़ जाता है। इस ठहराव को सँभालना थोड़ा मुश्किल है। इस ठहरी हुई सी लय के चलन का रिवाज़ रायगढ़ घराने में होता आया है। अतिविलिम्बित लय में नर्तक का मंच पर आना और इसी लय में तरह–तरह के अन्दाज बनाकर खड़े होना, अचम्भित करता होगा। ठहरी हुई गति को ठीक–ठीक माप कर चलना केवल श्रेष्ठ नर्तक के वश की ही बात है और उसके सहारे आप नर्तक के भीतर फैले या ठहरे हुए धैर्य को भी अनुभव कर सकते हैं।

**4. पंजों पर स्थित होकर एड़ी को भूमि पर पटकने की क्रिया जब पैर से की जावे तब उसे उद्धारित पाद कहते है।**

बड़े ख्याल को विलम्बितलय में गाने का रिवाज़ पुराना है। उसमें प्रयुक्त बन्दिश पर पदार्थाभिनय करने के लिए केवल शब्दों के अर्थ से काम नहीं चल पाता। उन शब्दों बल्कि अक्षरों के बीच की लय के स्वरूप को ध्यान में रखना और उसके अनुरूप नृत्य को रूप देना केन्द्रीय महत्व का है।

**5. मृदंग इत्यादि वाद्यों के पटाक्षरों या बोलों के आधार पर अंग संचालन नाचना प्रमलु कहलाता है। तु तु कार या तत्कार में तो केवल दो व्यंजन है तत, तत, तित, तो, था, थैय इत्यादि इन्हीं के विकास है। पाटाक्षर समूह या प्रिमलू के वजन पर पद संचालन ततकार है।**

इस बन्दिश पर भाव करने के लिए उस पद के शब्दों के बीच जो निरन्तर गति बनेगी या विश्रान्ति होगी, वही उसकी लय होगी। जिसे हम 'छन्द' कह सकते हैं। छन्द का भी गहरा ताल्लुक 'ध्वनि' से ही है।

प्राचीन वांगमय में आता है कि देवताओं को अग्नि के निकट जाना था। वे वहाँ जाने से डरते थे। अग्नि में तेज था। देवता उससे झुलस सकते थे। उनको संरक्षण की आवश्यकता थी। वे छन्द का आवरण ओढ़ते हैं, फिर अग्नि के निकट जाते हैं।

**6. दृष्टि द्वारा ही आंत्रिक संचालन की रेखा खींची है जो इन्दियों की चंचलता को आंतरिक रूप से मन से जोड़े रखती है मन को एकाग्र कर भवों द्वारा इस की निष्पत्ति में सहायक होती है।**

इसी कथा को अगर भारत–प्रेमी इत्तालवी उपन्यासकार रोबों कलासो के शब्दों में कहे तो प्रजापति ने अग्नि का निर्माण किया। वह किसी उस्तरे सी पैनी थी, डर के मारे देवता पास भी न फटकते, तब वे छन्द ओढ़कर उसके निकट गये। इस तरह छन्दों को नाम मिला। छन्द पवित्र शक्ति है, काले मृग का चर्म पावन शक्ति का रूप होता है, वह काले मृग के चर्म के जूते पहनता है कि उसे चोट न पहुँचे। अग्नि के निकट जाने से पहले वह स्वयं को छन्दों में लपेटता है। छन्द वे वस्त्र है जिनसे देवों ने अपने तन को आच्छादित किया, जिससे वे उस्तरे की धार से चोटिल हुए बिना अग्नि के निकट जा सके। (रोबर्तो कलासो के लेख 'छन्द देवताओं के मवेशी हैं' से)।

**7. मेघावली**

तिरकिट घे–धिट तिट। धिं तिरकिटतक तिटतिट
क्रधे–द्विकिट धग। तिट कत गदि गन।
का तिरकिट धिकिट धग। तिट क्रधा तिट कत।
का तिरकिटतक तागे तिट। कत कत का तिरकिटक।
धिट धिट घेघे तिट। कतक धिकिट धेने।
नन घेने न धान्न । धा... कतक धि।
किट घेघे नन घेघे। नधा..... नधा....
कतक धिकिट घेने। नन घेने न धा.....न।

**8. चमक बिजली**

गिड गिड थोम्। गिड गिड थोम।–तगन। धागे–धागे धागे तिट। कततिर किटतक। तिरकिट देत्। धा–न धा – न कत। कता घिड़नक । तिर किट देत् । गिड गिड घ्ड़ान ।
गिडगिड घ्ड़ान। गिड़गिड घ्ड़ान। धा–गिडगिड़। घ्ड़ान गिडगिड़
घ्ड़ान गिडगिड़। घ्ड़ान धा–गिड़गिड़ घ्ड़ान। गिड़गिड़ घ्ड़ान
गिडगिड घ्ड़ान। धा–गिडगिड़। थोम् गिडगिड। थोम्–त गन धागे। धागे धागे। तिट क्त त्रि। किटतक तिरकिट देत् धा– । न धा–न। कत कत्ता। घिड़नक तिरकिट। देत् गिड़गिड़। घ्ड़ान गिड़गिड घ्ड़ान गिडगिड़ घ्ड़ान धा। गिडगिड़ घ्ड़ान। गिड़गिड़ घ्ड़ान। गिड़गिड़ घ्ड़ान। धा गिड़गिड़
घ्ड़ान गिड़गिड़। घ्ड़ान गिड़ गिड़। घ्ड़ान धा। गिडगिड थोम।
गिड़गिड़ थोम् ।– तगन। धागे धागे। धागे तिट
कत तिरकिट तक। तिरकिट देत्। धा–न धा। न कत
कता घिड़नक। तिरकिट देत्। गिड़ गिड़ घ्ड़ान। गिडगिड़ घ्ड़ान।
गिडगिड़ घ्ड़ान। धा–गिड़गिड़ । घ्ड़ान गिडगिट। घ्ड़ान

गिडगिड
घ्ड़ान धा । गिड़ गिड़ घ्ड़ान । गिड़ गिड़ घ्ड़ान । गिडगिड घ्ड़ान ।

### 9. दल बादल

नगन धे–त–धे– तड़–न धा–धा। किड़ धे द्वै द्वै। धड़–न घिट घिट । धगन क... त।
धगन क... त्। तिट तिट धिट धिट। तड़िन् तकिट तक।
दिगिन् ना–ड़ धित् तग–न्न धा...। ता–धा–तिट कत। घेतिट तगन तग
तिट गदिन ता–न। धा... ता धा। तिट कट घेतिट त गन तग तिट गदि ।
न ता–न धा...। ता–धा तिट कत घेटित तगन तग। तिट गदिन ता–न।
धा... धेत् धेत् दिग–न्ना–ड़–धिट। नगन धे–त–धे। तड़–न्न धा–धा
किड़ धे–द्वै–द्वै। धड़ न धिट धिट। धगन क.....त्
धगन क... त्। तिट तिट धिट–धिट। तड़िन तकिट तक।
दिगिन ना–ड़धित् । तग न्न धा...। ता–धा–तिट कत
घेतिट तगन तग। तिट गदिन ता–न। धा... तान्धा
तिट कत घेतिट त। गन तग तिट गदि। न ता–न धा... ता–धा तिट कत।
धेतिट तगन तग। तिट गदिन ता–न धा... धेत् धेत्। दिग–न्ना–ड़ धिट।
नगन धे–त–धे–तड़–न्न धा–धा। किड़ धे– द्वै द्वै। धड़–न्न धिट घिट
धगन क...त्। धगन क...त। तिट तिट धिट धिट। तड़िन तकिट तक।
दिगिन ना–ड़ धित्। तग–न्न धा... ता–धा–तिट कत। घेतिट तगन तग। तिट गदिन ता–न
धा...ता...धा – । तिट कत घेतिट त। गन तग तिट गदि
न ता–न धा...। ता–धा–तिट कत। घेतिट तगन तग। तिट गदिन् ता–ना।। धा ।।

तालों की इन बन्दिशों में लिपटकर मेघों की श्रृंखलाएँ, बिजली की चमक और बादलों के दल के दल और उनसे लक्षित होते तमाम भाव हम तक चले आते हैं।

### निष्कर्ष

20वीं सदी के तीसरे चौथे दशक का रायगढ़। हम कल्पना करें कि राजा चक्रधर सिंह उद्यान में घूम रहे है। उन्होंने भौरे के गुंजन की ध्वनि सुनी। ऐसा कह ले कि उन्होंने भौरे का गुंजार सुना, तब उस ध्वनि से वे वर्ण पर आये, वर्ण से शब्द, वाक्य, पद और बन्दिश पर आये। अब बन्दिश चाहे अर्थवाहक हो या अमूर्तरूप को धारण किये हुए हो। ये धारणा ही छन्द है। यही से छन्द की जगह बल्कि उसी के साथ हम यह क्यों न कहें कथक नृत्य शैली का छन्द। छन्द भारतीय कला–परम्परा का अभिन्न अंग है, केन्द्रीय प्रत्यय है। छन्द तीन प्रकार के हैं। वार्णिक छन्द, मात्रिक छन्द, मुक्तक छन्द। छन्द में मात्रा, वर्ण, विराम, गति शब्द की योजना है। इसलिए इन सब छन्दों का उपयोग, संगीत में हुआ है। रायगढ़ नरेश ने इस व्याकरण को ध्यान में रखते हुए, विविध ग्रन्थों में इसका विस्तार किया। उन्होंने देश के कोने–कोने से तालसिद्ध, छन्दसिद्ध, गुणी, संगीतकारों, नर्तकों, कवियों आदि को एकत्र किया और उनकी उपस्थिति में ताल तत्व की गहराई से गवेषणा की। उन्होंने अनोखे बोल बन्दिशों की रचना की जैसे बादलों के समूह को देखकर 'दल बादल' परण। लगातार उमड़ते घुमड़ते बादलों के लिए चक्करदार परण रचा गया। ये चक्करदार परण उनके मन में घुमड़े भावों का विस्तार है। उन्होंने इन्हीं भावों को दर्शक या सहृदय में अन्तस में जागृत करने ये बोल रचे होंगे। कहा जा सकता है कि भावों का कोई विशिष्ट आकार नही होता पर उनका निश्चय ही विशिष्ट स्वरूप हुआ करता है। इन तालों के सहारे विविध भाव बिना अर्थ की मध्यस्थता के भावक या सहृद्य तक पहुँचते हैं बल्कि इन तालों के सहारे ये भाव भावक में जाग्रत होते है। जहाँ तक हमें पता है, कला का मुख्य धर्म सहृद्य में भावों को जाग्रत करना है। इन्ही भावों की कई बन्दिशें राजा चक्रधर सिंह की भी है जिनमें चमक बिजली, मेघावली, दल बादल परण, कड़क बिजली, मेघ पुष्प, घुमड़ बादल, जैसे हम कुछ उदाहरण दे सकते हैं –

### सन्दर्भ ग्रंथ सूची


1. आचार्य बृहस्पति, कथक प्रसंग आलेख, पृ.क्र. 11।
2. चिरंजी लाल झा, कला के दार्शनिक तत्व, पृ.क्र. 22।
3. डॉ.मांडवी सिंह, कथक नृत्य परम्परा में रायगढ़ दरबार, पृ.क्र. 84।
4. डॉ. पुरु दाधीच, नृत्त सूत्रम, विष्णु धर्मोतर पुराण तृतीय खण्ड, पृ.क्र. 32।
5. डॉ. श्रीमती गीता रघुवीर, कथक के प्राचीन नृत्तांग, पृ. क्र. 22।
6. वाचस्पति गैराला, भारतीय नाट्य परम्परा व अभिनय दर्पण, पृ.क्र. 247।
7. डॉ.मांडवी सिंह, कथक नृत्य परम्परा में रायगढ़ दरबार, पृ.क्र. 84।
8. डॉ.मांडवी सिंह, कथक नृत्य परम्परा में रायगढ़ दरबार, पृ.क्र. 75।
9. डॉ.मांडवी सिंह, कथक नृत्य परम्परा में रायगढ़ दरबार, पृ.क्र. 80।